बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन–आदतों का अध्ययन

डॉ0 सुरेन्द्रपाल सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा विभाग
धर्म समाज कॉलेज, अलीगढ़, (उ.प्र.)

लोहंस कुमार कल्याणी
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज,गोंडा (उ.प्र.)

शोध–सार

भारत एक विकासशील देश है और इसके सभी नागरिको ंका यह निरन्तर प्रयासरहता है कि हमारा देश विकसित राष्ट्रों की सूची में अपना स्थान सुनिश्चित कर ले। इसके लिए हमारे सम्पूर्ण समाज का शिक्षित होना अनिवार्य है। साथ ही यह आवश्यक है कि देश का प्रत्येक बालक व युवा अपनी सम्पूर्ण शिक्षा, ऊर्जा व चेतना का उपयोग सकारात्मक कार्यों में करे। इस शैक्षिक ऊर्जा व चेतना के विकास में बालकों की अध्ययन सम्बन्धी आदतें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। विद्यार्थी जिस वातावरण में रहते हैं, जैसी शिक्षा प्राप्त करते हैं, वैसी ही उनकी अध्ययन आदतें विकसित होती हैं। यदि बालको ंमें अच्छी अध्ययन आदतों का विकास होगा तो वे किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक कर लेगेंऔर उनका शैक्षिक स्तर भी बढ़ेगा। इसके विपरीत यदि बालकों में अध्ययन सम्बन्धी बुरी आदतों का समावेश हो तो उनमें मानसिक तनाव बढ़ेगा और उनका शैक्षिक स्तर भी गिरता चला जाएगा। बालकों मे बहुत सी बुरी आदतें, जैसे–पढ़ने के प्रति लापरवाही, एक विषय को ज्यादा समय तक पढ़ना, पढ़ने के प्रति लगन नहीं होना, कठिन विषयो ंपर ध्यान न देना, लेटकर पढ़ना आदि, जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं। छात्रों में अध्ययन की आदतों को विकसित किया जाना उनके व्यक्तित्व के लिए तो आवश्यक है ही, साथ ही भावी जीवन के निर्माण के लिए भी आवश्यक है।

शोध अध्ययन का महत्व एवं आवश्यकता

जैसे–जैसे शिक्षा में नवीन तकनीकी उपागमों का प्रयोग बढ़ रहा है, वैसे–वैसे विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी आदतों में परिवर्तन हो रहा है। पहले विद्यार्थी पुस्तकों पर अधिक निर्भर रहते थे और अब इण्टरनेट पर। समय के साथ–साथ विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ भी बदल रही हैं। अतः एक अध्यापक को अपने विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी आदतों से परिचित होना आवश्यक है ताकि वह विद्यार्थियों को उचित शैक्षिक व व्यवसायिक मार्ग दर्शन दे सके।

''शिक्षक के सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्यो ं में से एक है– छात्रों में अध्ययन की उत्तम आदतो ं का विकास करना।'' – शर्मा नन्दा

''शिक्षक का कार्य–छात्रो ं की उन विधियों की खोज करने में सहायता देना है, जिससे उनका अध्ययन उतना रोचक एवं सफल हो सके, जितना कि सम्भव है।''

चूँकि बी0एड0 स्तर के प्रशिक्षार्थी अपने प्रशिक्षण काल में शिक्षार्थी तथा शिक्षक दोनों की भूमिका निभाते हैं, वह अधिगम पर भी ध्यान देतं हैं और अध्यापन पर भी। इसलिए उनकी अध्ययन सम्बन्धी आदतों से परिचित होना आवश्यक है। इसके साथ ही, शिक्षा जगत में इन वैज्ञानिक चरों की महत्ता को देखते हुए शोधार्थी ने शोध अध्ययन के लिए इस समस्या का चयन किया।

शोध समस्या का कथन

''बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन–आदतो ं का अध्ययन''

परिभाषित शब्दावली:

- बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकः प्रस्तुत शोध अध्ययन में बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षको से अभिप्राय डॉ0 भीमराव अम्बेडकर यूनीवर्सिटी से सम्बद्धता प्राप्त महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 के विद्यार्थियों से है।
- अध्ययनः नवीन विषय सामग्री का ज्ञान प्राप्त करने के लिए, किसी समस्या का समाधान करने के लिए, विभिन्न विषयों, क्रियाओं एवं पारिस्थितियो ं के सम्बनधों की खोज करने के लिए या किसी उद्देश्यपूर्ण क्रिया का ज्ञान प्राप्त करने के लिए छात्र या सीखने वाले के द्वारा जो प्रयास किया जाता है, उसी को अध्ययन कहा जाता है।

अध्ययन सीखने का एक सम्पूर्ण प्रयास है।–मार्गन एवं डीज

- आदतः आदत एक स्वचालित व्यवहार है। आदत से अभिप्राय उन क्रियाओं से है, जिन्हें व्यक्ति अत्यन्त सरलता से एवं पूर्ण कुशलता से पुनः पुनः सम्पन्न करता है। जिनको परिस्थितियाँ प्रभावित नहीं करती हैं। आदत सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार की होती है। आदत का आधार अर्जित क्रिया है जो वातावरण में विकसित होती है।
- अध्ययन आदतेंः अध्ययन–आदतों से हमारा अभिप्राय उन स्वचालित मानसिक और आंगिक प्रतिक्रियाओं से है, जिन्हें अधिगम–स्थिति में बार–बार दोहराने से अर्जित व प्रकट किया जाता है। इन प्रक्रियाओं का सम्बन्ध नए ज्ञान (कौशल) की प्राप्ति से या प्राप्त कौशल के प्रयोग दोनों से होता है। प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययन–आदतों से तात्पर्य एम0 मुखोपाध्याय और डी0एन0 सनसनवाल द्वारा निर्मित स्टडी हैबिट इन्वेन्ट्री उपकरण द्वारा प्राप्त कुल प्राप्तांकों से है।

शोधअध्ययन के उद्देश्य

अनुसंधानात्मक समस्या के अनेक उद्देश्य होते हैं, जिनकी प्राप्ति के लिए अनुसंधानकर्ता सशक्त प्रयासशील होता है। उद्देश्य ही हमारे शिक्षात्मक प्रयत्नों के द्वारा विषयों का अबवोधन कराते हैं।

"उद्देश्य वह पूर्ण निर्धारित साक्ष्य होता है, जो किसी कार्य या क्रिया का मार्गदर्शन करता है।"

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

मुख्य उद्देश्य :

- बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।

सहायक उद्देश्य :

- बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन की आदतों का छात्र एवं छात्राओं के संदर्भ मे ं अध्ययन करना।
- बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन की आदतों का ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
- बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकोंकी अध्ययन की आदतों का ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
- बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन की आदतों का ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
- बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकोंकी अध्ययन की आदतों का आरक्षण श्रेणी के आधार पर अध्ययन करना।
- बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन की आदतों का धार्मिक–आधार पर अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रमुख परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं–

1. बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन आदतों का छात्र एवं छात्राओं के संदर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।
2. बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षको ं की अध्ययन आदतों का ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के सन्दर्भ में कोई सार्थक नहीं होता।

3. बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षको ं की अध्ययन–आदतों का ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।
4. बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन–आदतों का ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।
5. बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन आदतों में आरक्षण श्रेणी के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।
6. बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन–आदतों में धार्मिक आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।

शोध अध्ययन की परिसीमाएँ

1. प्रस्तुत शोध में अध्ययन का क्षेत्र अलीगढ़ जिले तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में अलीगढ़ जिले के महाविद्यालयों के बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में डॉ0 भीमराव अम्बेडकर यूनिवर्सिटी से सम्बद्धता प्राप्त महाविद्यालयों में अध्ययरनत बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।
4. अध्ययन आदतों के अन्तर्गत प्रशिक्षु शिक्षकों की बोधगम्यता एकाग्रता, कार्य–उन्मुखता, अभ्यास, अभिलेखन, अध्ययन सामग्री–संग्रह, अन्तक्रिया से सम्बन्धित आयामों को सम्मिलित किया गया है।

शोध अध्ययन की विधि एवं प्रक्रियाएँ

सर्वेक्षण विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अलीगढ़ जिले के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत अध्याय में न्यादर्श हेतु अलीगढ़ जिले के महाविद्यालयों मे ं अध्ययरत 100 बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षको ं को लिया गया है। जिसमे ं 50 छात्र व 50 छात्राएँ हैं। जिनका चयन यादृच्छिक विधि के माध्यम से किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रस्तुत उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन मे ं एम0 मुखोपाध्याय एवं डी0एन0 सनसनवाल द्वारानिर्मित मानवीकृत उपकरण ''स्टडी हैविड इन्वेन्ट्री'' को प्रयोग में लिया गया ।

प्रदत्तों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण

तालिका नं0 1

परिकल्पना–1 :

बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन–आदतों का छात्र एवं छात्राओं के संदर्भ में कोई अन्तर नहीं होता।

क्र0 सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
1.	बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षक (छात्र)	50	206.7	8.37	0.52	स्वीकृत (स्तर–0.05)
2.	बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षक (छात्रा)	50	205.76	9.66		

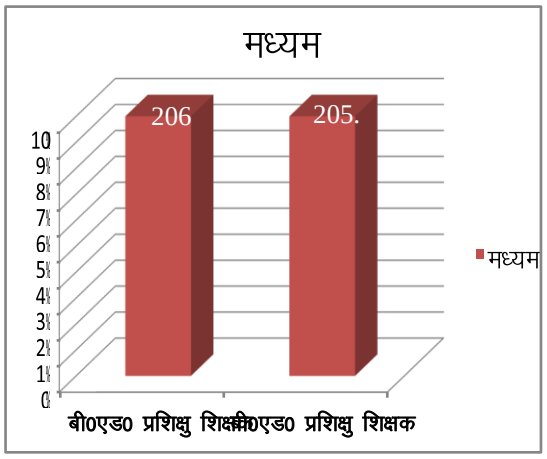

उपरोक्त तालिका से निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं–

परिकल्पना–1 का सम्बन्ध छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों को पता लगाना था।

इस सन्दर्भ में सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर छात्र (N = 50) का मध्यमान 206.7 तथा प्रमाप विचलन 8.37 प्राप्त हुआ तथा छात्राओं (N = 50) का मध्यमान 205.76 तथा प्रमाण विचलन 9.66 प्राप्त हुआ। दोनो ं समूहो ं के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए शोधकर्ता ने टी–मान की गणना की जो 0.52 प्राप्त हुई। 0.52 का टी–मान संदर्भ तालिका में दिये गये मान 0.05 स्तर पर 1.98 तथा 0.01 स्तर पर 2. 61 दोनों से कम है अर्थात् दोनो ं समूहों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना नं0 1, 0.05 स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

तालिका संख्या 2

परिकल्पना–2

बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन–आदतों का ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के संदर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
1.	ग्रामीण छात्र	25	207.44	8.50	0.88	स्वीकृत (स्तर 0.05)
2.	शहरी छात्र	25	205.12	10.09		

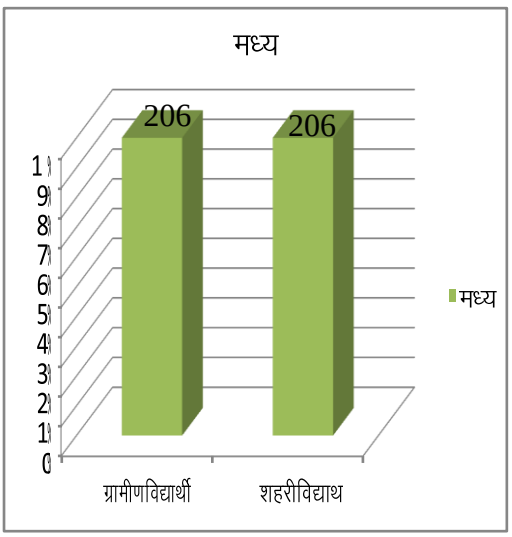

उपरोक्त तालिका से निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं

परिकल्पना–2 का सम्बन्ध ग्रमीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को पता लगाना था। इस सन्दर्भ में सांख्यिकीयविश्लेषण के आधार पर ग्रामीण विद्यार्थी (N = 50) का मध्यमान 206.34 तथा प्रमाप विचलन 9.33 प्राप्त हुआ तथा शहरी विद्यार्थियों (N = 50) का मध्यमान 206.12 तथा प्रमाण विचलन 8.76 प्राप्त हुआ। दोनो समूहों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए शोधकर्ता ने टी–मान की गणना की जो 0.12 प्राप्त हुई। 0.12 टी–मान संदर्भ तालिका मे ं दिये गये मान 0.05 स्तर पर 1.98 तथा 0.01 स्तर पर 2.61 दोनों से कम है अर्थात् दोनों समूहों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना नं0 2, 0.05 स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

तालिका संख्या 3

परिकल्पना–3

आदतों का ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के संदर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
1.	ग्रामीण विद्याथ ी	50	206.34	9.33	0.12	स्वीकृत (स्तर 0.05)
2.	शहरी विद्याथ ी	50	206.12	8.76		

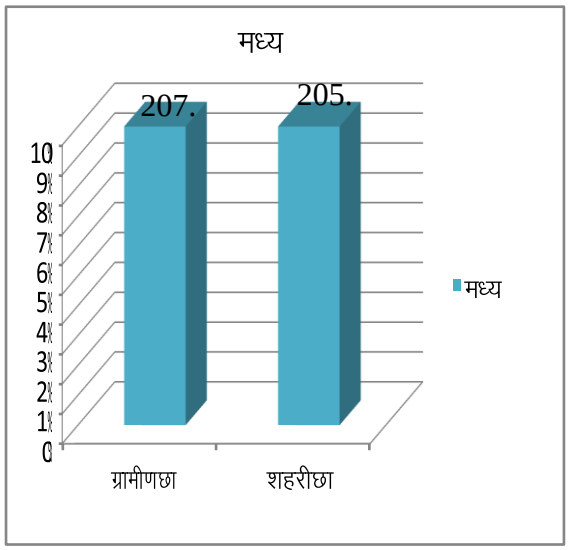

उपरोक्त तालिका से निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं–

परिकल्पना–3 का सम्बन्ध ग्रमीण एवं शहरी बी0एड0 प्रशिक्षु छात्रों की अध्ययन आदतों को पता लगाना था। इस सन्दर्भ में सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर ग्रामीण छात्रों (N = 25) का मध्यमान 207.44 तथा प्रमाप विचलन 8.50 प्राप्त हुआ तथा शहरी छात्रों(N = 25) का मध्यमान 205.12 तथा प्रमाण विचलन 10.09 प्राप्त हुआ। दोनो ं समूहों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए शोधकर्ता ने टी–मान की गणना की जो 0.88 प्राप्त हुई। 0.88 का टी–मान संदर्भ तालिका में दिये गये आवश्यक मान 0.05 स्तर पर 1.98 तथा 0.01 स्तर पर 2.61 दोनों से कम है इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों मे ं कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना नं0 3, 0.05 स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

तालिका संख्या 4

परिकल्पना–4

आदतों का ग्रमीण एवं शहरी छात्राओं के संदर्भ मे ं कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।

क्र0 सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
1.	ग्रमीण छात्राएँ	25	205.24	9.97	0.38	स्वीकृत (स्तर 0.05)
2.	शहरी छात्राएँ	25	206.28	9.31		

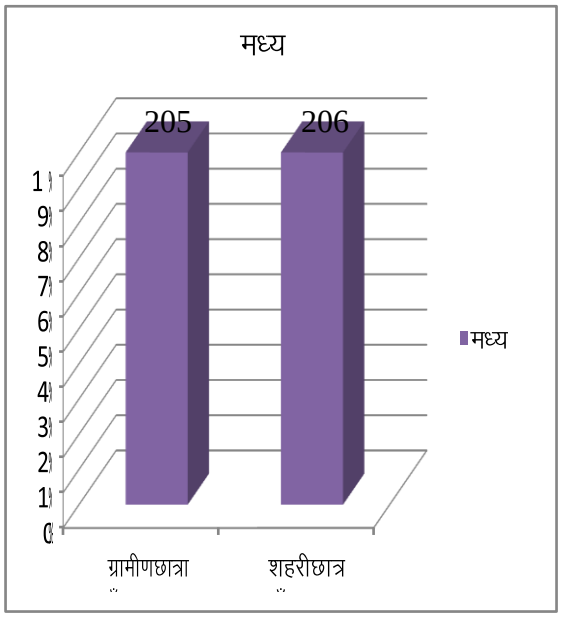

उपरोक्त तालिका से निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं।

परिकल्पना–4 का सम्बन्ध ग्रामीण एवं शहरी बी0एड0 प्रशिक्षु छात्राओं की अध्ययन आदतों को पता लगाना था। इस सन्दर्भ में सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर ग्रमीण छात्राऐं (N = 25) का मध्यमान 205.24 तथा प्रमाप विचलन 9.97 प्राप्त हुआ तथा शहरी छात्राओं (N = 25) का मध्यमान206.28 तथा प्रमाण विचलन 9.31 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए शोधकर्ता ने टी–मान की गणना की जो 0.38 प्राप्त हुई। 0.38 का टी–मान संदर्भ तालिका में दिये गये आवश्यक मान 0.05 स्तर पर 1.98 तथा 0.01

स्तर पर 2.61 से कम है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना नं0 4, 0.05 स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

तालिका संख्या 5

परिकल्पना–5आदतों का आरक्षण श्रेणी के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।

क्र0 सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
1.	गैर हिन्दू विद्यार्थी	15	208.33	9.19	0.93	स्वीकृत (स्तर 0.05)
2.	हिन्दू विद्यार्थी	85	205.97	8.17		

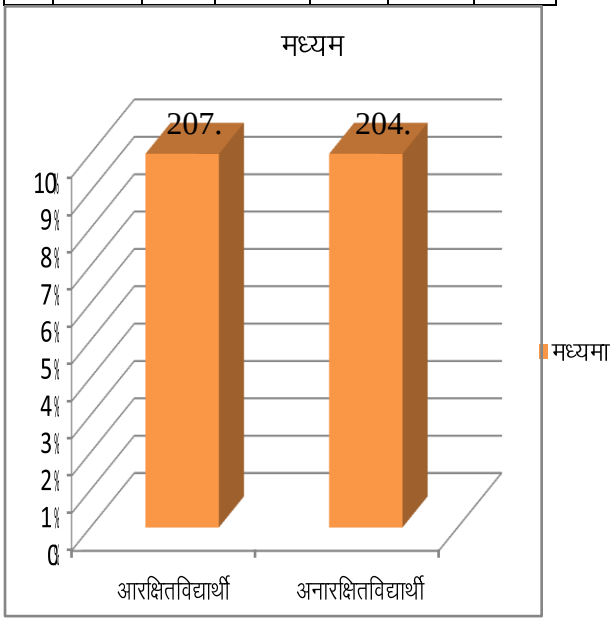

उपरोक्त तालिका से निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं :–

परिकल्पना–5 का सम्बन्ध आरक्षण श्रेणी के आधार पर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को पता लगाना था। इस सन्दर्भ में सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर आरक्षित विद्यार्थियों (N = 52) का मध्यमान 207.76 तथा प्रमाप विचलन 8.03 प्राप्त हुआ तथा अनारक्षित विद्यार्थियों (N = 48) का मध्यमान 204.56 तथा प्रमाण विचलन 9.77 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए शोधकर्ता ने टी–मान की गणना की जो 1.78 प्राप्त हुई। 1.78 का टी–मान संदर्भ तालिका में दिये गये आवश्यक मान 0.05 स्तर पर 1.98 तथा 0.01 स्तर पर 2.61 से कम है इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना नं0 5, 0.05 स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

तालिका संख्या 6

परिकल्पना–6

बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षको ं की अध्ययन–आदतो का धार्मिक आधारपरकोई सार्थक अन्तर नहींहोता।

क्र0 सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
1.	आरक्षित विद्यार्थी	52	207.76	8.03	1.78	स्वीकृत (स्तर 0.05)
2.	अनारक्षित विद्यार्थी	48	204.56	9.77		

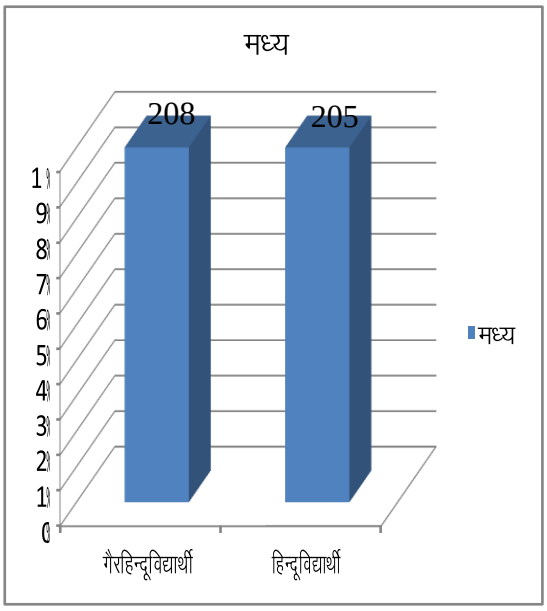

उपरोक्त तालिका से निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं।

परिकल्पना–6 का सम्बन्ध धार्मिक आधार पर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को पता लगाना था। इस सन्दर्भ में सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर गैर हिन्दू विद्यार्थियों (N = 15) का मध्यमान 208.33 तथा प्रमाप विचलन 9.19 प्राप्त हुआ तथा हिन्दू विद्यार्थियों (N = 85) का मध्यमान 205.97 तथा प्रमाण विचलन 8.17 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए शोधकर्ता ने टी–मान की गणना की जो 0.93 प्राप्त हुई। 0.93 का टी–मान संदर्भ तालिका में दिये गये आवश्यक मान 0.05 स्तर पर 1.98 तथा 0.01 स्तर पर 2.61 से कम है इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना नं0 6, 0. 05 स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिणाम एवं सुझाव

शोध निष्कर्षः

प्रस्तुत अध्ययन से विश्लेषण के दौरान निर्धारित उद्देश्यों पर कार्य करते हुए निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. प्रस्तुत शोध में पाया गया कि बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन–आदतों का छात्र एवं छात्राओं के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. प्रस्तुत शोध में पाया गया कि बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन आदतों का ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. प्रस्तुत शोध में पाया गया कि बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन आदतों का ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के सन्दर्भ मे कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. प्रस्तुत शोध में पाया गया कि बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन आदतों का ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
5. प्रस्तुत शोध में पाया गया कि बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षको की अध्ययन आदतों में आरक्षण श्रेणी के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
6. प्रस्तुत शोध में पाया गया कि बी0एड0 प्रशिक्षु शिक्षकों की अध्ययन आदतों में धार्मिक आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सन्दर्भ सूची

पुस्तकें –

1. पाठक, पी0डी0, शैक्षिक मनोविज्ञान, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2
2. रांय, पारसनाथ, (2008) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण, आगरा।
3. कपिल, एच0के0 (1997) सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. शैक्षिक लघु शोध (संकलित) (2011–12), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर।
5. एमरजिंग रिसर्च जर्नल (जून–2017), जबलपुर पब्लिक कॉलिज, जबलपुर।

जर्नल्स : पत्र व पत्रिकाएँ–

1. Sharma, S.R. (2003) Problems and Educational Research, Anmol Publication Pvt. Ltd., New Delhi
2. Dr. Balidan Jain (March -2014) Volume-2, Issue-1, TSSN -2320-2882, Internatioanl Journal of Creative Research Thoughts, Rajasthan Vidhyapeeth, Udaipur.
3. Dr. (Mrs.) Shobha Gaur and Sushil Kumar (June 2015), Volume-07, Issue-01, ISSN-0975-7090, Anmol Multilingual Internatioanl Peer Reviewed

Research Journal, Gorakhpur University, Gorakhpur.
4. Dr. P.K. Nath, Shashi Mishra (May-2018) Volume-3, Issue -3, ISSN2456-6157, International Journal of Advanced Education Research, Kota, Bilaspur, Chattisgarh, India.
5. Dr. Manoj Jhajharia, Dr. Rajendra Prasad Jhajhria, (June-2015) Volume2, Issue-3, ISSN-2348-6457, International Journal of Education and Science Research Review, Rajasthan.
6. Mahwish Rabia, Hira Tallat, (Nov.-2017), Department of Statistics, Govt. College Women University, Sialkot, Pakistan.
7. Dr. Sanjay Kumar (2015), volume -5, ISSN-2277-3169, International Journal of Education and Information Studies.
8. Dr. Naeemullah Bajwa, Aizaz Ahmed, Gulzar, Dr. Ghazal Shaheen, Dr. Muhammad Ramzan, International Journal of Business and Social Science, Pakistan.

Websites:

- http://www.education.nic.in
- http://www.dissertation.com
- http://www.wikipedia.com